प्रातः क्लास 8-4-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

ओमशान्ति। शिव भगवानुवाच जैसे और पंडित लोग कृष्ण भगवानुवाच कहते है या व्यास भगवानुवाच ब्रह्मा वशिष्ट भगवानुवाच कहते हैं वह तो सभी शरीर के ही नाम है। और यह तो है शिव भगवानुवाच। इनके शरीर का नाम तो ब्रहमा है। यह अपना नाम नहीं लेते हैं। कहते हैं शिव भगवानुवाच बच्चों प्रति। क्यों कि बच्चे ही जानते है कि शिव बाबा हमको राजयोग सिखाते हैं। तन तो ब्रहमा का ही लेते हैं। उनको भागीरथ कहा जाता है। तुम समझते हो बरोबर शिव बाबा का निवास स्थान परमधाम है। जरूर बाप परमधाम से आकर कहते हैं शिव भगवानुवाच। अच्छा अभी पहले मनोहर दीदी से प्रश्न पूछते हैं कि एक है ज्ञान दूसरा है योग। अभी पहले योग है वा ज्ञान? एक अक्षर में रेसपान्ड करो। शिव बाबा आकर के क्यो बतलाते हैं? (ज्ञान) अच्छा योग बड़ा या ज्ञान बड़ा? (योग बड़ा है परन्तु योग के लिए भी ज्ञान चाहिए।) पहले2 तो बाप है ज्ञान का सागर। पहले योग के लिए ज्ञान देते हैं। फिर सृष्टि के आदि मध्य अन्त का भी ज्ञान देते हैं। पहले ज्ञान देते ही हैं याद की। मुख्य बात ही है बाप को याद करने की। फिर है वर्सा। यह है ही नई2 बातें। तुम्हारी बुधि ऊपर चली जाती है। बाबा आकर हमको पढ़ाते हैं। ज्ञान देते हैं। और कोई जगह ऐसी बात होती नहीं। बच्चों को निश्चय है बाप आकर हमको पढ़ाते हैं। यह भी निश्चय है शिव बाबा की यह स्थापना की रूहानी युनिवर्सिटी है। अभी हम यह बाहर वालों को कैसे समझावें कि हम यह पढ़ते हैं जिस पढ़ाई से यह बड़े ते बड़ा मर्तबा पाते हैं। है तो जरूर भगवानुवाच है, बच्चों में तुमको राजयोग सिखलाता हूं। राजाओं का का राजा बनाता हूं। हम पढ़ते हैं। जैसे यह माथुर जी है अथवा कोई बड़े पोजिशन वाला फिमेल है, तुम से कोई पूछते हैं कहां जाते हो इस समय। तो बोलना चाहिए हम जाते हैं रूहानी युनिवर्सिटी में पढ़ने लिए। हम स्टुडन्ट है, पढ़ाई पढ़ने जाते हैं। यह बहुत ऊंच ते ऊंच पढ़ाई है। कौन सी ऊंच ते ऊंच पढ़ाई है? मनुष्य से देवता अथवा विश्व का मालिक बनने की। यह देवतायें विश्व के मालिक थे ना। यह तो बच्चे जानते हैं इस पढ़ाई में सब आ जाता है। रूहानी युनिवर्सिटी में हम पढ़ते हैं उस मे हम सभी मिनिस्टरी भी पास करते हैं, हेल्थ की युनिवर्सिटी भी पढ़ते हैं, फुड मिनिस्टरी भी पढ़ते हैं। एक ही बाप हमको सब पढ़ाते हैं। कैरेक्टर्स सुधारने लिए भी पढ़ते हैं। ऐसी कोई पढ़ाई नहीं रहती जो तुम न पढ़ते हो। उन्हों का तो अलग2 नाम है। फुड मिनिस्टर अलग, एडयुकेशन मिनिस्टर अलग। तुम तो सब बनते हो। बड़े ट्रेईयर भी हो। तुम्हारे जसा ट्रेईयर कोई हो न सके। तो बच्चों को ऐसे2 विचार सागर मथन करना चाहिए। बाबा जानते हैं कर्मातीत अवस्था पहुंचने में टाईम लगेगा। परन्तु पाईन्टस सभी बुधि में धारण करनी है। करनी है। जब कोई मिनिस्टर आद मिलते हैं तो बोलना चाहिए हम यहां सभी सीखते हैं। हेल्थ मिनिस्टरी, फुड मिनिस्टरी सब सीखते हैं। और हमको ईश्वरीय मत मिलती है। जिस से सारा हमारा यह भारत एवर हेल्दी ऐवर वेल्दी बन जाता है। सुना है भारत की आयु कितनी बड़ी थी? हम वहां जाते हैं। हमको ऐसे बाप से श्रीमत मिलती है। जो हम कब भी कंगाल नहीं बनते हैं। वहां बजट आद निकलती नहीं। वहां तो अनगिनत धन होता है। हम एवर हेल्दी बनने लिए पढ़ते हैं। योग से एवर हेल्दी बन जाते हैं, बाप से पढ़ने लिए हम जाते हैं। एक पास सब नालेज है। जो भी मिनिस्टर्स है हैंड मिनिस्टरी, वर्ल्डींग मिनिस्टरी, तुम क्या2 पढ़ते हो। बच्चों को अन्दर में खुशी भी होनी चाहिए। और ऐसी पढ़ाई में बच्चों का अटेन्शन भी बहुत देना चाहिए। एक दो में रूठ कर पढ़ाई छोड़ देते या कह देते फुर्सत नहीं, यह भी ठीक नहीं है। इसमें फुर्सत की ते बात ही नहीं। कैसे भी कर के पढ़ना है। बाहर में मुरली द्वारा सभी कुछ मिलता है। मुरली ही मशहुर है। कृष्ण को मुरलीधर कह दिया हैपरन्तु अर्थ तो कुछ भी समझते नहीं। अभी तुम समझते हो शिव बाबा क्या कमाल कर देते हैं। जो भी पढ़ाईयां हैं उनका तन्त हमको पढ़ा देते हैं। इसमें कोई किताब आद उठाने आद की बात नहीं रहती। यह है रूहानी स्पीचुअल युनिवर्सिटी। वास्तव में पाईन्टस नोट करने की भी दरकार नहीं। परन्तु बुधि कोई की कैसी कोई की

कैसी है। इसलिए नोट करते हैं। कोई को तो नोट करने से भी धारणा नहीं होती है। कोई तो नहीं नोट करते हैं फिर भी धारण कर और कराते हैं। यह तो मोक्ष इज़ी है। सिर्फ पढ़ाई का तन्त निकलता है, मीठे2 बच्चों मामेकं याद करो तो मैं गेरन्टी करता हूं तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। भगवान बाप आकर गेरन्टी करते हैं वह साधू लोग आद तो गेरन्टी करते हैं बच्चा गिरा। अगर बच्चो पैदा हो गई तो कहेंगे भावी। बाकी जो तलसम आद सीखते हैं आग से, पानी से चले जाते हैं यह तो सभी हैं स्थूल बातें। यहां सब है आत्मा और परमात्मा। आत्मा का ज्ञान भी परमात्मा बाप ही देते हैं। शरीर दवारा। तो बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों मुझे याद करो। हम आये ही हैं तुमको सतोप्रधान बनाने लिए। आत्मा पतित तमोप्रधान बनी है, वह पावन सतोप्रधान कैसे बने मुख्य है यह बात। हम सतोप्रधान यह देवता थे। अभी बच्चों को मालूम पड़ा है 84 जन्म हम ने ही लिये हैं। तो ऐसे भगवान बाप से कब भी ब्रु× बेमुख न होना चाहिए। याद और पढ़ाई है मुख्य। बहुत बेमुख हो पड़ते हैं। रुसते हैं। कुमारी की कुमार साथ सगाई होती है तो कितना उनको याद करते हैं। फिर उन से फायदा क्या होता है? कुछ भी नहीं। अभी तो तुमको याद करना ही है एक बाप को। जिस से इतना भारी वर्सा मिलता है। यह बातें होती ही है संगम युग पर। तो बच्चों को कितनी मीठी2 अच्छी बातें सुनाता हूं। प्यार करता हूं। ऐसे तो नहीं टीचर रूप में पढ़ा कर घर चला जाता हूं। तुम बाप के पास आते हो ना। उस पढ़ाई में ऐसे थोड़े ही मिलने आते हैं। इसमें तो बाप भी है टीचर भी है। याद की यात्रा भी सिखलाते हैं। डैरेक्शन देते हैं और कहां भी न जाओ। सिर्फ एक बाप को ही याद करो। निष्ठा में खास कोई बैठना होता है क्या। समझते हैं बाप भी जरूर अपने स्वधर्म में बैठेंगे। बाप का स्वधर्म है शान्त। तुम बच्चों का भी स्वधर्म है शान्ति। हम शान्तिधाम के रहवासी हैं। जिसको परमधाम कहते हैं। अभी हम संत के संग में बैठे हैं। सत्य है ईश्वर। वह बाप भी है टीचर भी है। सदगुरु भी है। साथ में ले जाने वाला भी है। यह तो बुधि में रहना चाहिए ना। खुशी भी रहे। इसमें डिफीक्ट कुछ भी नहीं है। वह तो कितने टाईटल्स रखते हैं। डाक्टर आफ फिलासफी। उसकी टोपी अलग रखते हैं। यहां तो ऐसे कोई बात नहीं। यह तो सिम्पुल है। जैसा सिम्पुल बाप, वैसा सिम्पुल ज्ञान है। सिम्पुल योग है। सहज ज्ञान सहज योग। बोलना करना, उठना बैठना बहुत ही सहज है। बाप कितना सहज बात सुनाते हैं। यहां तुमको अच्छी रीत समझाया जाता है फिर जब घर में जाते हो तो कोई कहां से याद आता है कोई कहां से याद आता। यहां की बातें सभी भूल जाते हैं। बाबायुक्तियां तो बहुत ही बतलाते हैं घूमने जाओ तो भी बातें यह बातें करो। मंदिर में भी जाओ तो यही समझाओ। तुमको मालूम है तुम भी इस पुरुषार्थ से इन जैसा बन सकते हो। यह है पूज्य। जरूर इन्हों ने 84 जन्म लिये होंगे। पुजारी बने होंगे। ज्ञान के पीछे भक्ति जरूर है। पूज्य के बाद पुजारी ×× जरूर है। तो जो सर्विस पर तत्पर रहते हैं वही ऐसे2 समझा, सर्विस कर सकते हैं। बड़े2 आदमियों को भी समझाना है। कितने टाईटल्स मिलते हैं। कहेंगे यह इतनी पोजिशन वाला है। यह तो बहुत ऊंची बात सुनाते हैं। बड़े आदमियों का बड़े आदमियों से ही मुंह लगता है। तो बाप कहते हैं बड़े आदमियों को पकड़ना है। भल पहले गरीब ही पढ़ते हैं परन्तु शाहुकारों को भी उठाना चाहिए। जो बैठ समझावे। तुम्हारा तो कोई टाईटल आद है नहीं। तुम बच्चियां तो सभी अनपढ़ी हो। मनुष्यों को सब याद रहता है। यह यह इम्तहान पास किया है। सभी खुरकता है। तुमको तो वह भी नहीं खुरकता। सभी भूसा निकाल दिया है। नया ज्ञान धारण होता रहता है। बाप भी साधारण है आकर बच्चियां कुवजारं मिलनियारं अहिल्यारंको ही उठाते हैं। अभी श्रीकृष्ण वेश्याओं के पास जावेंगे क्या। यह तो बाप ही आकर पढ़ाते हैं। बाप ने समझाया है वेश्यारं हैं अधम ते अधम। वह अच्छी रीत आकर समझे, उनको रहना भी तो अपने ही घर में है। ऐसे नहीं उन्हों को हम खिलावें, रखावें। बोलती है हम यह पढ़ाई पढ़े फिर हमको खिलावेंगे कौन। और तुम जैसी घर में रहती हो वैसे रहो। छुट्टी लेकर सिर्फ आकर पढ़ो। तुम जेल में जाकर समझाते हो परन्तु उस पर टीप तो बड़ी है ना।

गवर्मेन्ट क्या जाने। वह कोई छुट्टी थोड़े ही दे सकेंगे। तुम कहां तक बैठ समझावेंगे। हां जाकर जेलर को समझाओ। तो ऐसे2 सर्विस का खयालात सारा दिन चलनी चाहिए। इस समय तो तुम तुम ड्रामा अनुसार सर्विस करते आये हो। तुमकह सकते हो हम एक बाप के द्वारासभी कुछ पढ़ लेते हैं। कुछ भी पढ़ने की नालेज रहती नहीं है। यह है होल सेल नालेज। इस से हम सभी बन जाते हैं। वह तो है रेजकारी। हमसभी कुछ पढ़ लेते हैं। बाप को कोई फिक्र नहीं। बच्चों को भी फिक्र नहीं। जो कुछ तुम करते हो बाबा समझते हैं कल्प पहले भी किया था। डिस सर्विस कल्प पहले भी की थी। अपना ही पद भ्रष्ट किया है। बाप को फिक्र नहीं है। शान्ति जैसी कोई चीज़ है नहीं। चुप रहना है। तुम्हारे कोई चीज़ तोड़ फोड़ जावेंगे। तुमको हाथ नहीं लगावेंगे। सो भी बाबा के योग में होंगे तो। याद से ही सभी मनोकामानाएं पूरी होती है। कैरेक्टर्स को सुधारना सारा याद पर है। जितना याद में रहेंगे उतना ही कैरेक्टर्स सुधरेंगा। माया भल कितना भी हैरान करे। तुमको हनुमान मिशल अडोल रहना है। हनुमानएक तो नहीं होगा ना। ल०ना० की भी डिनायस्टी होगी। जैसे ड्रेडवर दी फर्स्ट, एडवर दी सेकण्ड चलता है ना। वैसे महाराजा फर्स्ट सेकण्ड फिर्पर्ड फिर राजा फुर्ड सेकण्ड .... चलता है। कृष्ण के राज्य का क्रिश्चन की हाथ कनेक्शन नहीं है लेन देन का। भारत से बहुत लिया है फिर देने का भी है। आटोफ्रली चलता रहता है। देते भी अभी आई देने के टाईम है। इस समय भारत को जरूरत है। उस समय उन्हों को जरूरत थी। तो सभी ले गये। यह सभी बातें बाप बिगर कोई समझा न सके। वह तो नालेजफुल का अर्थ भी नहीं समझते। हरेक मनुष्य की अपनी2 बात है। अनेक मत मतान्तर हैं। बाप को जानते थोड़े ही हैं। जानते तो याद भी करे। अभी तुम ने बाप को जाना है। बाप ने समझाया है भक्ति का भी पार्ट है। भक्त माल भी होते हैं। जो बहुत अच्छी भक्ति करते हैं उसमें भी तो जरूर पहले नम्बर में तो होंगे ना। नाम-रूप देश, काल बदलता जाता है। तुम ने ही भक्ति शुरू की है। तो सब से जास्ती भक्त भी तुम हो। जो ज्ञान माल में बनेंगे होंगे उन्हों ने ही बहुत भक्ति की होगी। तुम्हारे में ही भक्त बने हैं। जो फिर आकर ज्ञान लेते हैं। बाप भी कहते हैं जो बहुत अच्छा भक्त होगा पहले वाला वही इस ज्ञान को समझ जावेगा। पीछे वाला इतना नही समझेगा। जिन्हों ने भक्ति की है उन्हों को ही बाप आकर फल देते हैं। वही जास्ती पढ़ेंगे। आपको मालूम पड़ जावेगा सुनने से चेहरा कैसे हो जाता है। बाप में लव कितना है। वह भी मालूम पड़ता है। बच्चों को तो बहुत प्यार होना चाहिए। आत्मा बाप को देखती है। बाबा हमको पढ़ाते हैं। बाप भी समझते हैं हम इतनी छोटी बिन्दी को बैठ पढ़ाता हूं। तुमको बिन्दी याद नहीं आती है। परन्तु समझ गये हो। आगे चल कर यह समझेंगे हम भाई2 को पढ़ाते हैं। सिकल भल बहिन की है परन्तु दृष्टि आत्मा तरफ जावेगी। शरीर पर दृष्टि न जाये। इसमें ही बड़ी मेहनत है। हम भाई2 समझ कर पढ़ावें। जानते हैं आत्मा बिन्दी है। उन में सारा ज्ञान भरा हुआ है। बहुत भारी माल है। बहुत भारी पढ़ाई है। इनके पेट में वह तो पाई पैसे की है। वजन करो तो इस पढ़ाई के तरफ बहुत भारी हो जावेगा। बाप कहते हैं मैं आत्माओं को पढ़ाता हूं। तो आत्मा को रियलाईज़ करना है कि वह क्या चीज़ है। बाप को बैठ रियलाईज़ कराना होता है कि आत्मा ऐसी है। मनुष्यों की बुद्धि में तो बैठा हुआ है परमात्मा हज़ारों सूर्यों से ज्योति तेजोमय है। तो उनको वही सा० होगा। जैसे अर्जुन का मिशाल देते हैं। उस ने कहा मैं तेज़ सहन नहीं कर सकता हूं। पहले2 ऐसे भी बहुतों को सा० होते थे। मनुष्य समझेंगे उनको भगवान का सा० हो गया। हम कहेंगे कुछ भी नहीं। ऐसे तो भगवान है नहीं। यह तो जैसे भावना है उस अनुसार ही सा० होता है। तो हम एवर हेल्दी, वेल्दी 2। जन्मों लिए कैसे बनते हैं यह समझाना पड़े। बाबा ने समझाया था ऐसे2 बोर्ड लगा दो। घर पर लगा हुआ हो। 2। जन्म लिए सदा निरोगी कैसे बन सकते हैं आकर समझो। कितना सहज है। लिखा हुआ भी है भगवानुवाच। कब गीता पढ़ी है? इस में क्या लिखा हुआ है बाप कहते हैं अपने को आत्मा मामेकं याद

करो। आत्माओं का बाप परमात्मा शिव ही ठहरा। इनको याद करने से पाप कट जावेंगा। यही प्राचीन राजयोग है। तुम हो स्प्रीचुअल डाक्टर। तो ऐसे2 विचार सागर मथन करो। कैसे युक्ति रचें जो फट से मनुष्य आ जाये। नाम वाला हो जाये। बड़े2 आदमियों का नाम अखबार में भी झट आ जाता है। कहेंगे यह तो डाक्टर ऐसा है जो हेल्थ-वेल्थ फोर जनरेशन मिलते हैं। डाक्टर आफ स्प्रीचुअल नालेज। कितना अच्छा नाम है। ऐसे नाम का मैं नहीं समझता हूं कोई होगा। बिलायत में भी जाकर बहुत सर्विस कर सकते हैं। वह जो मनुष्यों को ठग कर ले आते हैं हैं। यह सभी हैं रिधी सिधी। बहुत सीखते हैं रिधी सिधी। ऐ उन्हों के भी बड़े किताब होते हैं। तुम्हारे इस ज्ञान तो कोई किताब है नहीं। बाप कहते है मैं खुद तुमको ज्ञान देता हूं। फिर किताब कोई रहता ही नहीं हैं। तुमको बाप ने यह पढ़ाई पढ़ाई है। धर्म भी स्थापन होता है। मनुष्यों को कुछ भी धर्म का पता नहीं हैं। ऐसा कोई मनुष्य नहीं हो जो कहे बाप आकर ब्राह्मण कुल स्थापन करते हैं। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी डिनायस्टी आकर स्थापन करते हैं। इस समय की पढ़ाई आधा कल्पसुख देती है। तो बाहर मे जो जाकर इन महाऋषियों आद पास फंसे हैं उनको तुम सावधान करसकते हो। प्राचीन योग तो गाड फादर ने सिखाया था मनुष्य थोड़े ही सिखाये सकते हैं। अखबार में भी पढ़ जोय कि कोई भी देहधारी मनुष्य कब योग नहीं सिखला सकते। गाड फ्रीफादर ही लिबरेटर ग्राईड गाईड है। सभी दुःखों से दूर कर सुख में साथ ले जाते हैं। जिसको तुम पेराडाईज, सुप्रीम पीस का स्थान भी कहते हो। कितनामनुष्य फंस जाते हैं। उन्हों को जैसे रिधी सिधी से राजाई मिल जाती है। बहुत ठगते हैं। तो इन से बचाना चाहिए। कहां से कहां ले आते हैं। बाबा जो कहते रहते थे विलायत में ईन्द्र और मोहिनी को भेजें। अभी तो माथुर जी विलायत में आते और जाते रहते हैं। ज्ञान पर अटेन्शन भी है। वहां के जो भी मट आद हैं सभी को समझावें भारत का प्राचीन योग यह है नहीं। प्राचीन अर्थात पहला पहला। वह तो होता है कलियुग और सतयुग के बीच में। गाड फादर ही नालेज फुल है। वही आकर योग सिखलाते हैं कि मामेकं याद करो। इसमें हठयोग आद की कुछ भी बात नहीं। सिर्फ कहते हैं मेरे बच्चे मामेकं याद करो। तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। तो अन्त मते सो गति हो जावेंगी। सतोप्रधान बनने लिए बाप का यह यह ऐलान है। अखबार में ऐसी बात पढ़ जाये तो माथुर जी का कितना नाम हो जाये। फिर इस पर टाईटल भी देवें डाक्टर आफ स्प्रीचुअल नालेज। रूहानी ज्ञान का नम्बर वन डाक्टर। तुम भी रूहानी डाक्टर हो ना। एवर हेल्दी बनाने वाले डाक्टर और कोई होते नहीं। यह भी बातें बुधि में धारण करनी है। बाबा ऐसे नहीं कहते हैं धंधा आद न करो। जहां, तहां यह रूहानी सर्विस करो। विलायत में ठका हो जाये तो हिन्दुस्तान में भी हो जोय। बच्चों ने प्रश्न का रेसपान्ड ठीक दिया। पहले2 बाबा ज्ञान देते हैं। योग के लिए भी ज्ञान देते हैं। योग से पावन बनते हैं। ज्ञान से फिर वर्सा पाते हैं। बाकी वह तो सभी है भक्ति मार्ग। मंदिरों आद में कितने ढेर मूर्तियां रहती है। जितनी मूर्तियां होंगी उतने पैसे चढ़ेंगे। बाप कहते हैं यह भक्ति मार्ग का धंधा फिर भी होगा। शिव के मंदिर में तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। इसलिए ही बनारस को पकड़ा हुआ है। वहां से भी बहुत नाम होगा। झूठे टाईटल्स देते रहते हैं। तुमको कहते हैं तुम ने शास्त्र पढ़ी हैं। बोलो शास्त्र तो हम जन्म जन्मान्तर पढ़ते आये हैं भक्ति करते आये हैं, भक्ति के बाद ही भगवान मिलेगा ज्ञान से सदगति मिलेगी। भक्ति दुर्गति में ले जाते हैं तब ही बाप आकर सदगति में ले जाते हैं। खुलासा समझाओ। ऐसे नहीं कहना है हम इन शास्त्रों को नहीं मानते हैं। इससे तो दुर्गति होती है। समझाने की बड़ी युक्ति चाहिए। जितना हम पढ़े हैं भक्ति जितनी हम ने की है स्मृति है ना। बोलो हम द्वापर के आदि से भक्ति करना शास्त्र पढ़ना शुरू किये हैं ऐसे बोलने से वह खुश हो जावेंगे। बाप कितना प्यार से बैठ समझाते हैं। बाप तो कोशिश करेंगे अच्छी रीत पढ़ कर अपना उच्च पद पा लेवें। मोस्ट बिलवेड बाप है। तुमको भी बहुत प्यारा बनाते हैं पढ़ाई से। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।